पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

असमीया विवाह गीतों में राम कथा का वर्णन

डॉ॰ अर्चना हजारिका

असम पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों में से एक है। यह पूर्वोत्तर का प्रवेश-द्वार है। यहाँ अनेक जाति – जनजाति के लोग निवास करते हैं और सबकी भाषा–संस्कृति अलग-अलग हैं। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि असम की संस्कृति एक मिली–जुली संस्कृति है। असम में मुख्यतः असमीया भाषा बोली जाती है। विविध जनजातियों की संस्कृतिओं के मेल से बृहद् असमीया जाति की संस्कृति का निर्माण हुआ है।

साहित्यिक संपन्नता की दृष्टि से असमीया का साहित्य भंडार काफ़ी सम्पन्न है। असमीया साहित्य भंडार में लिखित साहित्य के साथ - साथ लोक साहित्य की भी कोई कमी नहीं है। यों कह सकते हैं कि असम लोक साहित्य का समृद्ध भंडार है। लोक साहित्य का निर्माता असम का जातीय समाज है। लोक साहित्य के द्वारा लोक समाज अपने मन की भावनाओं को अपने तरीके से व्यक्त करता है। लोक साहित्य असमीया समाज के हर वर्ग के लोगों के जीवन को दर्शाता है।

'लोकगीत' असमीया लोक साहित्य का एक अविच्छिन्न अंग है। इन गीतों में असमीया लोकसमाज के जनमानस के सुख-दु:ख, अनुभूति, परंपरा, विश्वास तथा संस्कृति के अनेक पक्ष मुखरित हो उठे हैं। अन्य गीतों की तरह लोक गीतों में कोई विशिष्ट संगीत पैमाना नहीं होता। ये सरल, स्वच्छन्द एवं मधुर होते हैं। ये गीत विभिन्न उत्सव, पर्व, त्योहार आदि पर गाये जाते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं – विवाह गीत, बिहु गीत, श्रम गीत, आइ नाम (शीतला माता के पूजन के गीत), निचुकनि गीत (लोरी), बाल गीत, बारह महीनों के गीत, देव–देवी के पूजन के गीत आदि।

असमीया विवाह गीतों में राम कथा का वर्णन :

आदिकाव्य रामायण की लोकप्रियता भारतीय समाज एवं साहित्य में बहुत अधिक है। असमीया लोक साहित्य के हर क्षेत्र में रामायण का प्रभाव परिलक्षित होता है। विशेष रूप से लोकगीत, मुहावरे, कहावतें तथा लोक कहानियाँ रामायण से ही प्रेरित हैं। असमीया लोक जीवन में रामकथा की परंपरा काफ़ी पुरानी है। अतः असमीया लोकगीतों में रामकथा के प्रयोग का सही समय निर्धारित करना अत्यंत कठिन है। असमीया समाज जीवन में व्यक्ति के जन्म से

लेकर मृत्यु तक के हर अवसर पर गाये जाने वाले विभिन्न लोकगीतों में राम के जीवन से संबन्धित घटनाओं का सुंदर एवं सजीव चित्रण परिलक्षित होता है। इन लोकगीतों में राम को एक आदर्श पुत्र , आदर्श भाई , आदर्श पति तथा मानवीय मूल्यों से सम्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में वर्णित किया गया है।

असमीया समाज जीवन में विवाह को एक अलग ही मर्यादा प्राप्त है। विवाह संस्कार असमीया समाज में सबसे प्रसिद्ध और प्रधान लोकाचार है। विवाह समारोह में 'आयती' कही जाने वाली बुजुर्ग महिला अक्सर एक प्रकार का गीत गाती है, जिसे 'विवाह गीत' कहा जाता है। यह विवाह गीत असमीया लोक साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो असमीया समाज जीवन तथा संस्कृति से लोगों को परिचित कराता है। यद्यपि ये गीत स्वत: स्फूर्त हैं, फिर भी इन गीतों के माध्यम से नारी मन की अनुभूति, दूल्हा-दुल्हन के रूप-सौन्दर्य, वैवाहिक जीवन में नारी के कर्तव्य तथा दायित्व आदि विषयों का वर्णन किया गया है। असमीया समाज में विवाह संस्कार में जोरोण (दुल्हन को वस्त्राभूषण का चढ़ावा), पानी तोला (मांगलिक स्नान हेतु जल-संग्रह), नोवनी गीत (स्नान गीत), दूल्हे का स्वागत, पंडाल-सजावट ,बेटी-विदाई आदि कई सारे रस्मों का पालन किया जाता है और प्रत्येक रस्म में अलग-अलग गीत गाये जाते हैं। इन विवाह गीतों में दूल्हा और दुल्हन की तुलना राम-सीता से की जाती है ।यहाँ तक कि 'आयती' इन विवाह गीतों के माध्यम से कल्पना करती हैं कि दूल्हा और दुल्हन के घर अयोध्या और मिथिला में हैं।

असमीया विवाह का पहला खंड 'जोरोण' है। असमीया विवाह संस्कार में यह एक ऐसा रस्म है, जिसमें दूल्हे के घर से दुल्हन के लिए शादी का जोड़ा, गहने आदि भेजे जाते हैं । इन्हें पहनकर दुल्हन विदा होती है। इस रस्म को 'तेल दिया' रस्म भी कहा जाता है। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं, उन गीतों को 'जोरोण गीत' कहा जाता है। इन गीतों में दूल्हा-दुल्हन के रूप में राम-सीता तथा दूल्हा –दुल्हन के माता-पिता के रूप में राजा जनक, दशरथ, कैकयी, सुमित्रा आदि का भी जिक्र मिलता है। एक उदाहरण इस प्रकार है-

"मारार अलंकार थोवा काति करि
ऐ राम देउतारार अलंकार थोवा हे।
रामे दि पठाइछे बिचित्र अलंकार
ऐ राम हाते योरे करि लोवा हे।

कैकेयी आहिछे सुमित्रा आहिछे
आहिछे रामरे माउ।

जनकर जीयरी जानकी सुंदरी

जोरण पिन्धाये आजि चाउ।।"[1]

(कामरूपी लोकगीत, पृ.87)

इसमें दुल्हन से कहा गया है कि अब तुम अपनी माँ तथा पिताजी के दिये हुए अलंकार खोल कर रख दो। रामचंद्र जैसे तुम्हारे स्वामी ने विचित्र अलंकार भेजे हैं, दोनों हाथ जोड़ कर उन्हें ग्रहण करो। कैकयी, सुमित्रा और राम की माता भी आयी हैं। राजा जनक की बेटी जानकी सुंदरी को आज जोरोण में वस्त्र-अलंकार पहनाया जा रहा है, हम सभी इसे देखती हैं।

असमीया समाज में शादी के मांगलिक कार्य से पहले दूल्हा और दुल्हन को नहाने का रस्म है। इस रस्म में दुल्हे-दुल्हन को हल्दी लगाकर केले के पौधे के नीचे स्नान कराया जाता है और इस अवसर पर गाँव की महिलाएँ गीत गाती हैं, जिसे 'नोवनी गीत' कहा जाता है। दूल्हे को स्नान करने के लिए बुलाते हुए महिलाएँ इस प्रकार गाती हैं -

"नोवनी घरलै नाहे रामचंद्र ऐ राम

सीता कॅला बुलि शुनि हे।।

सुबर्णर शज्याते आइदेउ शुइ आछे

इकथा मनतो नाइ।। "[2]

(बार माहर तेर गीत, पृ. 22)

गाँव की महिलाएँ दूल्हे को चिढ़ाते हुए कहती हैं कि हमारे रामचंद्र स्नान घर में नहीं आना चाहते, क्योंकि उन्होंने कहीं से सुन लिया है कि उनकी होने वाली पत्नी सीता काली है। हे राम सोने के पलंग पर बैठकर वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं क्या तुम इस बात को भूल गये हो ? इस गीत में दूल्हे-दुल्हन की तुलना राम-सीता के साथ की गयी है।

असमीया समाज के विवाह संस्कार में एक महत्वपूर्ण रस्म है 'पानी तोला'। इसमें गाँव की महिलाएँ पास की नदी या तालाब से कलशों में पानी लाती हैं और बाद में उसी पानी से दूल्हा-दुल्हन को नहाया जाता है। पानी लाने हेतु जाते समय सभी महिलाएँ हर्षोल्लास के साथ-साथ नृत्य-गीत भी करती हैं। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं, उसे 'पानी-तोला' गीत कहा जाता है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

"जोन बेलि छकुरि गोपीनी

जोन बेलि जोने चिकेमिकाय

तरा ऐ मइ बोलो किबा फुल फुले।

जोन बेलि रामचंद्रर पदुलित

जोन बेलि छकुरि गोपीनी

तरा ऐ पारे बुले येन बुले।। "[3]

(बार माहर तेर गीत, पृ.21)

अर्थात् चाँद सूरज जैसी सुन्दर गोपियाँ एक साथ पानी लेकर आ रही हैं। दूर से उन्हें देखकर

ऐसा लग रहा है मानो वे कोई फूल हों। आज रामचंद्र जैसे सुन्दर वर के आँगन में ढेर सारे फूल खिल रहे हैं। इस गीत में वर के रूप में रामचंद्र का जिक्र किया गया है।

शादी के दिन दूल्हा और उसके रिश्तेदार दुल्हन के घर की यात्रा करते हैं। इस प्रक्रिया में भी गीत गाए जाते हैं जिनमें भी राम के बारे में बताया गया है। एक उदाहरण इसप्रकार है -

"पदुलि मुखते बकुल फुल फुलिले
अइ राम तार माझे बेलरे शारीहे ।
चोवा मूर दाङि आमार रामचन्द्र
अइ राम देखिया शहुरर बारीहे ।"[4]

(कामरूपी लोकगीत, पृ॰ 89)

अर्थात् फाटक के पास बकुल के फूल खिल रहे हैं और उसके बीच में बेल की पंक्ति है। हे रामचंद्र, जरा चेहरा उठाकर अपने ससुर की बाड़ी देख लो।

असमीया विवाह गीतों में दूल्हे के साथ निकलने वाली बारात की तुलना सीता-उद्धार हेतु लंका-यात्रा के साथ की गयी है। जैसे -

"अइ राम धनु धर
हनुमंतइ शर धर
लोकर कइना शुइ आछे
लक्ष्मण तइ खर कर ।"[5]

(असमीया रामायणी साहित्य : कथाबस्तुर आँतिगुरि, पृ॰707)

अर्थात् हे राम, तुम धनुष खींच लो, हनुमान तुम भी बाण पकड़ लो, दुल्हन सो रही है अतः लक्ष्मण तुम जल्दी करो।

सामान्यतः विवाह गीतों के माध्यम से राम-सीता के जीवन की कहानी परिलक्षित होती है। राम-सीता के विवाह के पीछे की कहानी जिसमें राम ने हरधनु को तोड़ा था, उसे भी असमीया विवाह गीत में दर्शाया गया है। जैसे-

"रभार चारिओफाले प्रजागण बहिछे
लोहार पाति थैछे धेनु ,
इनो प्रजागणे चानि परिछे
रामेहे भाङिब धेनु ।"[6]

(बार माहर तेर गीत, पृ॰ 24)

अर्थात् पंडाल के चारों ओर प्रजागण बैठे हुए हैं और सामने लोहे का हरधनु रखा हुआ है। प्रजाओं की भीड़ लगी हुई है, क्योंकि राम ही धनुष को तोड़ेंगे।

दूल्हा-दुल्हन जब होम के पास एक साथ बैठते हैं तभी गाँव की महिलाएँ दोनों को चिढ़ाते हुए गीत गाती हैं, इन गीतों को 'जोरा नाम' कहा जाता है। इन गीतों का मूल रस हास्य-व्यंग्य है। जैसे-

"मारार घरते आछिला आइदेउ
ऐ राम खाइ पिठा गुरिर लाडु।
आमार रामचंद्रत परिला आइदेउ

ऐ राम पिन्धाब सोणरे खारु ।।"[7]

(बार माहर तेर गीत, पृ. 31)

अर्थात् अब तक तुम अपननी माँ के घर में थी और वहाँ पर तुम्हें चावल के आटे के लड्डू ही खाने को मिलते थे। अब तुम्हारा विवाह हमारे रामचंद्र जी के साथ हुआ है। वे तुम्हें सोने की चूड़ियाँ पहनाकर रखेंगे। कहने का अर्थ यह है कि अब तक तुम्हें सिर्फ दुख ही प्राप्त हुआ है। रामचंद्र जैसा दूल्हा मिला है, अब तुम्हारे सारे दुखों का अंत होगा।

दुल्हन जब दूल्हे के गले में वरमाला डालती है, तब इस प्रकार के गीत गाए जाते हैं –

"सखीसबे बोले सीता तुमि भाग्यवती

तोमार भेलन्त स्वामी राम रघुपति।"[8]

(असमीया रामायणी साहित्य : कथाबस्तुर

आँतिगुरि, पृ॰709)

अर्थात् सखियाँ दुल्हन से कहती हैं कि हे सीता, तुम बहुत ही भाग्यशाली हो। क्योंकि तुम्हें रघुपति राम जैसा पति मिला है।

असमीया समाज में बेटी-विदाई के समय भी गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में भी राम - सीता का वर्णन परिलक्षित होता है। जैसे -

"दीघलकै ओरणि नलबा आइदेउ

आगर आसै पोवा दरा।

उठा जे उठा राम नुठा जे एरि याम

गाभरुर रखीया हॅबा।

अय अलंकारे सीता हॅल तोमारे

उठा राम घरलै बॅला।।"[9]

(बार माहर तेर गीत, पृ.30)

अर्थात् इतना लम्बा पल्लू मत लो क्योंकि दूल्हे को तुम पहले से ही जानती हो। हे राम उठो, अगर नहीं उठे तो तुम्हें यहीं छोड़ के जायेंगे। तुम इन जवान लड़कियों के रखवाले बनोगे । सभी अलंकारों के साथ सीता तुम्हारी हुई अर्थात् तुम्हारी शादी संपन्न हुई। अब घर चलो।

इस प्रकार असमीया विवाह-संस्कार से जुड़े विभिन्न लोकगीतों में राम-कथा का एक विशेष महत्व है। असमीया विवाह गीतों में राम-कथा वर्णन की परम्परा बहुत प्राचीन है। इन गीतों में वर्णित रामकथा में राम एक आदर्श पुरुष हैं, तो कहीं साहसी और कहीं विरही हैं । कहा जाता है कि इन लोकगीतों में केवल नारी का अधिकार है। इन लोकगीतों के माध्यम से असमीया नारी अपने मन की भावनाओं को बेझिझक व्यक्त करती है।

असमीया लोकगीत असमीया समाज जीवन, संस्कृति का दर्पण है। ये गीत असमीया ग्रामीण लोगों के सुख - दुख आदि अनुभूतियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। उपरोक्त आलोचना से

यह स्पष्ट होता है कि असमीया समाज रामायण की कथा से काफ़ी प्रभावित था तथा असमीया लोग राम के आदर्शों को अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग करते थे, जिसका उदाहरण लोक गीतों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अतः कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही असमीया समाज-जीवन, साहित्य, संस्कृति तथा दर्शन रामायण-कथा से प्रभावित हैं।

संदर्भ-सूची :

1. दास, बाबुल, कामरूपी लोकगीत (संकलन /संपादना), स्टूडेंट्स स्टोर्स, गुवाहाटी, 2011,
2. गोस्वामी, प्रफुल्लदत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ- 22
3. वही , पृष्ठ - 21
4. दास, बाबुल, कामरूपी लोकगीत (संकलन /संपादना), स्टूडेंट्स स्टोर्स, गुवाहाटी, 2011, पृष्ठ-89
5. महंत, केशदा, असमीया रामायणी साहित्य : कथाबस्तुर आँतिगुरि, पृष्ठ – 707
6. गोस्वामी, प्रफुल्लदत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ- 24
7. वही ,पृष्ठ – 31
8. महंत, केशदा, असमीया रामायणी साहित्य : कथाबस्तुर आँतिगुरि, पृष्ठ – 709
9. गोस्वामी, प्रफुल्लदत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ- 30

संपर्क सूत्र:
सहायक प्राध्यापिका
नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज ,असम